International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030; Impact Factor: RJIF 5.24
Received: 08-03-2019; Accepted: 10-04-2019
www.advancedjournal.com
Volume 4; Issue 3; May 2019; Page No. 36-38

कामकाजी एवं गैर कामकाजी माताओं के बच्चों में टीकाकरण की स्थिति

डॉ0 अर्चना गुप्ता [1], मुक्ता तिवारी [2]

[1] प्राध्यापक, गृहविज्ञान विभाग, शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।

[2] शोध छात्रा, गृहविज्ञान विभाग, शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश

इस शोध पत्र के द्वारा कामकाजी एवं गैर कामकाजी माताओं के बच्चों में टीकाकरण की स्थिति का अध्ययन किया गया है। टीकाकरण बचपन में होने वाली कई जानलेवा बीमारियों से बचाव का एक सबसे अधिक सुरक्षित एवं असरदार तरीका है। सार्वभौमिक टीकाकरण कार्यक्रम के माध्यम से टीकारोधक बीमारियों से बचाव करने में महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल हुई हैं। टीकाकरण कार्यक्रम को उच्च प्राथमिकता देते हुए इसे निरंतर जीवन्त बनाए रखना आवश्यक है जिससे सभी टीकारोधक बीमारियों की घटनाओं को कम किया जा सके। बच्चे के जीवित रहने के लिए टीकाकरण एक प्रमुख रणनीति है। इसके द्वारा टीकारोधक रोगों से शिशुओं की सुरक्षा सुनिश्चित करके बच्चों में रोग और मृत्यदर को काफी हद तक कम किया जा सकता है। शोध क्षेत्र में कामकाजी एवं गैर कामकाजी माताओं के बच्चों में टीकारण की स्थिति में कोई सार्थक अन्तर नही है। इसका कारण है कि आज के समय में गैर कामकाजी माताएँ भी अपने बच्चों के प्रति बहुत ही सजग है।

मूल शब्द : कामकाजी माताएँ, गैर कामकाजी माताएँ, बच्चे, टीकाकरण।

प्रस्तावना

किसी बीमारी के विरुद्ध प्रतिरोधक क्षमता विकसित करने के लिये जो दवा पिलाई जाती है या किसी अन्य रूप में दी जाती है, उसे टीका कहते है तथा यह क्रिया टीकाकरण कहलाती है।

वैक्सीन को किसी भी रूप में हमारे शरीर में भेजा जाता है। हो सकता है कि यह दवा आपकों खिलाई जाए, पिलाई जाए या इंजेक्शन के माध्यम से इसे आपके शरीर में डाली जाए।

वैसे तो हमारे शरीर में एक प्रतिरक्षण तंत्र होता है जो किसी भी प्रकार की बीमारी से लड़ता है और हमें उससे बचाता है। कुछ लोगों का यह सिस्टम मजबूत होता है तो कुछ का कमजोर होता है। जब किसी बीमारी वाले जीवाणु हमारे शरीर में प्रवेश कर जाते हैं और बीमार करने लगते हैं, तब हमारा शरीर इन जर्म्स की पहचान कर लेता है कि यह हमें नुकसान पहुंचाने वाले हानिकारक जीवाणु हैं। ऐसे में हमारा शरीर स्वयं ही इन हानिकारक जीवाणुओं से लड़ने के लिए एक तरह का प्रोटीन बनाने लगती है जिसे एंटीबॉडीज कहते है।

टीकाकरण बच्चों की बामीरियों के प्रसार को कम करने के लिए शुरू किया गया था और यह कई बीमारियों के मामले में सफल साबित हुआ है। ऐसी बीमरियाँ है जो दुलर्भ मामलों में अक्षमता पैदा कर सकती हैं और कभी–कभी पीड़ित व्यक्ति की मृत्यु भी हो सकती है। बच्चें का टीकाकरण इस तरह की बीमारियों से प्रभावित होने के खतरे को काफी हद तक कम कर सकता है। मातायें जागरुक है और अपने बच्चों का टीकाकरण कराते है तो अन्य गंभीर बीमारियों से बचा जा सकता है।

सभी टीकों को एक समय दिया जा सकता है परन्तु इन्हें शरीर के विभिन्न भागों पर अलग–अलग ए.डी. सिरिंजो से लगाया जाना चाहिए। एक ऐसे बच्चे को जिसे कभी टीके नहीं लगाये गये हैं उसे 9 माह की उम्र में बी.सी.जी., डी.पी.टी., हेपेटाइटिस–बी, ओपीवी एवं खसरे के टीके तथा विटामिन–ए की खुराक एक ही समय देना सुरक्षित और असरदायक है।

महत्व

टीकाकरण का महत्वपूर्ण उद्देश्य बच्चों को सभी घातक विषाणुजन्य या जीवाणुजन्य बीमारियों से बचाव करना है जिन्हें रोग से होने से या उसके गम्भीर परिणामों से या उससे होने वाली मौतो से बचाया जा सके।

टीकाकरण या रोग प्रतिरक्षण की प्रक्रिया के द्वारा हम कुछ विशेष बीमारियों जिससे बचना संभव है, के विरुद्ध हमारे शरीर में रोगों से लड़ने की क्षमता या शक्ति की वृद्धि करते है।

हमारे देश में टीकाकरण की शुरुआत 1978 में हुई और 1985 में इस अभियान का पूरा नाम यूनिवर्सल इग्युनाइजेशन प्रोग्राम यानी सार्वभौमिक टीकाकरण कार्यक्रम रख दिया गया। इसके अन्तर्गत टीके के माध्यम से रोके जा सकने वाले 12 रोगो के लिये और गर्भवती स्त्रियों और शिशुओं का टीकाकरण होता है।

इस कार्यक्रम के तहत 16 वर्ष तक के बच्चों एवं गर्भवती महिलाओं को घातक रोगों के विरुद्ध टीके दिये जाते है। बच्चें के टीकाकरण की शुरुआत उसके माता के गर्भ में रहते ही हो जाती है।

शोध की परिकल्पनायें

1. शोध क्षेत्र में कामकाजी एवं गैर कामकाजी माताओं के बच्चों में टीकाकरण की स्थिति में सार्थक अन्तर है।

उद्देश्य

- कामकाजी एवं गैर कामकाजी माताओं के बच्चों में टीकाकरण की स्थिति ज्ञात करना।
- शासन स्तर पर टीकाकरण की योजनाओं के क्रियान्वयन की वस्तुस्थिति ज्ञात करना।

शोध अध्ययन का परिसीमन

प्रस्तुत शोध जबलपुर शहर की कामकाजी एवं गैर कामकाजी

माताओं तक परिसीमित किया गया है। उक्त परिसीमन में कामकाजी माताओं के लिए व्यापार, मजदूरी, निजी संस्थानों एवं शासकीय संस्थानों में कार्यरत माताएँ एवं गैर कामकाजी माताओं (गृहणी) का चुनाव विभिन्न आवासीय क्षेत्रों से किया गया है।

न्यादर्श चयन

अनुसंधान तथा शोध के प्रयोग का प्रारूप न्यादर्श की प्रविधि पर आधारित होता है। इस अध्ययन के लिए जबलपुर शहर से कामकाजी एवं गैर कामकाजी माताओं के समूह से 50 माताओं का रैण्डम प्रणाली द्वारा चुनाव किया गया है।

शोध विधियाँ

शोध कार्य को संपूर्णता प्रदान करने हेतु कई प्रकार की शोध विधियों का उपयोग किया जाता है। शोध विधियों के मुख्य प्रकार ऐतिहासिक, वर्णनात्मक एवं प्रयोगात्मक है। शोध कार्य के अनुरूप प्रत्येक शोध विधि की अपनी विशेषताएँ एवं उपयोगिता है। शैक्षिक अनुसंधान की दृष्टि से प्रस्तावित शोध कार्य मुख्य रूप से सर्वेक्षणात्मक (वर्णनात्मक) होगा। प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित विधियों एवं उपकरणों का उपयोग किया जाएगा –

सर्वेक्षण विधि – प्राथमिक स्त्रोतों से प्रदत्तों के संकलन एवं पूर्व संचालित प्रदत्तो के सत्यापन हेतु शोध क्षेत्र के कामकाजी एवं गैर कामकाजी माताओं के बच्चों में टीकाकरण की स्थिति से संबंधी जानकारी के लिए क्षेत्रीय सर्वेक्षण किया गया।

साक्षात्कार विधि – शोध क्षेत्र जबलपुर शहर में कामकाजी एवं गैर कामकाजी माताओं के बच्चों में टीकाकरण की वर्तमान स्थिति की ज्ञात करने के लिए इस क्षेत्र में संलग्न कामकाजी एवं गैर कामकाजी माताओं से वस्तुस्थिति का पता लगाने हेतु साक्षात्कार किया गया है।

सांख्यिकी विधि – प्रयुक्त शोध उपकरणों से प्राप्त प्रदत्तों के सारणीयन के उपरान्त आवश्यकतानुसार माध्य, माध्यिका एवं बहुलक, दो चरों में सार्थक अन्तर के आंकलन हेतु मध्यमान विचलन, टी–परीक्षण जैसी सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

शोध क्षेत्र का परिचय

जबलपुर 23°.10′ उत्तरी अक्षांश से 79°.56′ पूर्व देशान्तर के बीच स्थित है। जबलपुर की समुद्रतल से ऊँचाई 412 मीटर है। जबलपुर भोपाल से 303 कि.मी. पूर्व की तरफ राष्ट्रीय राजमार्ग 45 पर स्थित है और देश की राजधानी दिल्ली से 855 कि.मी. दक्षिण–पूर्व की तरफ ही और ये राष्ट्रीय राजमार्ग 44 पर है।

परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

सारणी 1: शोध क्षेत्र में कामकाजी एवं गैर कामकाजी माताओं के बच्चों में टीकाकरण की स्थिति का सार्थकर्ता हेतु सारणी

समूह		कामकाजी	गैर कामकाजी
समूह की संख्या (N)		25	25
मध्यमान (M)		31.00	33.00
मानक विचलन (SD)		6.93	6.32
क्रान्तिक निष्पत्ति (C.R.)		–1.07	
निष्कर्ष	0.05 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नही है	
	0.01 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नही है	

$df = (N_1-1) + (N_2-1)$

$df = (25-1) + (25-1) = 24+24 = 48$

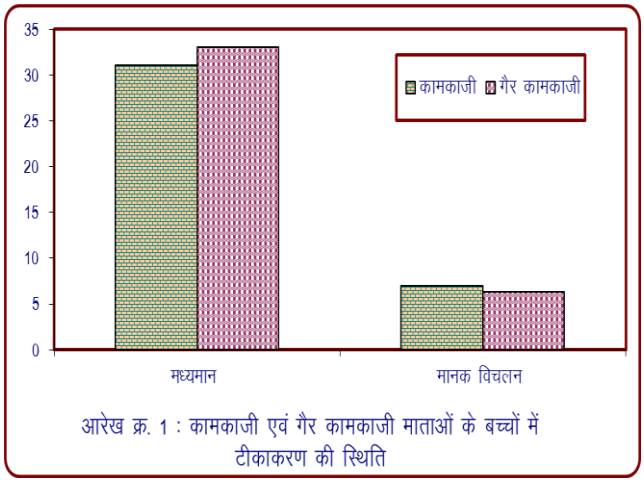

आरेख क्र. 1 : कामकाजी एवं गैर कामकाजी माताओं के बच्चों में टीकाकरण की स्थिति

उपरोक्त सारणी क्रमांक 1 मे न्यादर्श में शोध क्षेत्र में कामकाजी एवं गैर कामकाजी माताओं के बच्चों में टीकाकरण से सम्बधित प्रदत्त संकलित किये गये हैं। संकलित प्रदत्त प्राथमिक स्त्रोत पर आधारित है। सारणी में संकलित प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण से स्पष्ट है कि शोध क्षेत्र में कामकाजी माताओं के बच्चों में टीकाकरण में सार्थकता का औसत उपलब्धि 31.00 है तथा मानक विचलन 6.93 है।

उपरोक्त सारणी क्रमांक 1 में न्यादर्श में चयनित शोध क्षेत्र में गैर कामकाजी माताओं के बच्चों में टीकाकरण के सम्बन्ध में प्रदत्त संकलित किये गये हैं। संकलित प्रदत्त प्राथमिक स्त्रोत पर आधारित है। उपरोक्त सारणी में संकलित प्रदत्तों का सांख्यिकी विश्लेषण किया गया है। सांख्यिकी विश्लेषण से स्पष्ट है कि शोध क्षेत्र में गैर कामकाजी माताओं के बच्चों में टीकाकरण में सार्थकता का औसत उपलब्धि 33.00 है तथा मानक विचलन 6.32 है।

48 df पर सार्थकता के लिए 't' का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.69 तथा 0.05 विश्वास स्तर पर 2.01 है, जबकि अध्ययन से प्राप्त 't' का मान –1.07 है, जो कि दोनो विश्वास स्तरों के मानों से कम है। अतः शोध क्षेत्र में कामकाजी एवं गैर कामकाजी माताओं के बच्चों में टीकारण की स्थिति में कोई सार्थक अन्तर नही है। इसका कारण है कि आज के समय में गैर कामकाजी माताएँ भी अपने बच्चों के प्रति बहुत ही सजग है। अतः परिकल्पना निरसित होती है।

निष्कर्ष

संपूर्ण टीकाकरण (अर्थात एक साल की उम्र होने तक शिशु को बी.सी.जी. का एक टीका, डी.पी.टी., हेपेटाईटिस–बी और ओ.पी. वी. के तीन–तीन टीके तथा खसरे का एक टीका) होने से बच्चे को स्वस्थ जीवन का सबसे बेहतर अवसर प्राप्त होता है। बीमारियों को होने से पहले उन्हें रोकने से धन एवं उर्जा की बचत तथा जीवन की सुरक्षा होती है। शोध क्षेत्र में कामकाजी एवं गैर कामकाजी माताओं के बच्चों में टीकाकरण की स्थिति में कोई सार्थक अन्तर नही है। इसका कारण है कि आज के समय में गैर कामकाजी माताएँ भी अपने बच्चों के प्रति बहुत ही सजग है। मानसिक और शारीरिक विकास के लिए बच्चों को निर्धारित समय पर टीका लगवाना अति आवश्यक होता है।

संदर्भ

1. India’s journey from hyperendemic to polio-free status by NCBI
2. Child Health Programme by MOHFW
3. For Parents: Vaccines for Your Children by CD
4. Intussusception – children by medlineplus
5. A strategic approach to Reproductive, Maternal, Newborn, Child and Adolescent Health in Health, Ministry of Health and Family welfare, Government of India, 2014, pdf file